REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2019

सार्वजनिक जीवन में धर्मः गाँधी की दृष्टि में एक अध्ययन

डॉ. राम विनोद कामत
बी० ए०, एम० ए०, बी० एड, पी–एच०डी०
+2प्रोजेक्ट गर्ल्स हाई स्कूल, दुलारपुर, दरभंगा.

भूमिकाः–

धर्म का मुख्य संबंध वस्तु एवं व्यक्ति की सत्यता की प्रत्येक इकाई के अपने मूल स्वभाव से है। मूल स्वभाव को ही उस वस्तु का धर्म कहा जाता है। अधिक व्यापक अर्थ में धर्म विश्व के संचालक नियमों का ही पर्याय है इसलिए सत्य, मूल, धर्म, परस्पर अभिन्न है एवं यही सृष्टि के मूलभूत धर्म है।

सर्वधर्म समभाव के दर्शन का उदय संस्कृत के 'धृ' धातु से धारण अर्थ में हुआ है। गीता कहती है– ''स्वधर्मो निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः'' जिसका अर्थ है दूसरे के धर्म को पालन करने की अपेक्षा स्वधर्म को पालन करते हुए निधन प्राप्त करना श्रेयष्कर है, जबकि परधर्म का पालन करना हमेशा भयावह होता है। मनुस्मृति में भी धर्म के दस लक्षण बतलाए गए है। जिसमें मानव के सात्त्विक गुणों का उल्लेख मिलता है। ये दस लक्षण वस्तुतः दैवी सम्पन्न व्यक्तियों के हैं जिनसे व्यक्ति को मानव धर्म के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।

राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में धर्म शब्द का प्रयोग रिलीजन या मजहव के रूप में किया जाता है। अर्थात् 'उपासना'' पंथ के अर्थ में होने लगा। इस्लाम और क्रिश्चिएनिटी में धर्म के व्यापक अर्थ वाली कोई अवधारणा नहीं है। वर्तमान में धर्म शब्द का प्रयोग रिलिजन और मजहब पूरे विश्व में किया जा रहा है।

स्वदेशी आन्दोलन को गाँधीजी ने आगे बढ़ाया और उसको व्यापक स्वरूप प्रदान किया, तभी तुर्की के खलीफा को हटाया उसके विरूद्ध खिलाफत आन्दोलन भारत में चल उठा। गाँधीजी मुसलमानों की भावनाओं का सम्मान करते हुए खिलाफत आन्दोलन करते हुए काँग्रेसों का समर्थन दिलवाया। दुर्भाग्यवश शीघ्र मुसलमानों के जेहादी जुल्मों ने कई जगहों हिन्दुओं से विद्वेष का रूप ले लिया। विशेषकर भलावार मुस्लिम मौओं पर भी भीषण अत्याचार किया जिससे हिन्दू मुस्लिम टकराव में वृद्धि होने लगी। गाँधीजी ने इस साम्प्रदायिक सौहार्द्र को वैचारिक आधार देते हुए सर्वधर्म सम्भाव का दर्शन प्रस्तुत किया।

महात्मा गांधी की मूलतः गुजराती में लिखी पुस्तक हिन्द स्वराज्य हमारे समय के तमाम सवालों में जूझती है। महात्मा गांधी की यह बहुत छोटी सी पुस्तिका कई सवाल उठाती हैं और अपने समय के सवालों के वाजिब उतरों की तलाश भी करती है। सबसे महत्व की बात हैं कि पुस्तक की शैली। यह किताब प्रश्नोत्तर की शैली में लिखी गयी है। पाठक और संपादक के सवाल–जबाव के माध्यम से पूरी पुस्तक एक ऐसी लेखन शैली का प्रमाण जिसे कोई भी पाठक बेहद रूचि से पढ़ना चाहेगा। यह पूरा संवाद महात्मा गांधी ने लंदन से दक्षिण अफ्रीका लौटते हुए लिखा था। 1909 में लिखी गयी यह किताब मलतः यांत्रिक प्रगति और सभ्यता के पश्चिमी पैमानों पर एक तरह हल्लाबोल है। गांधी इस कल्पित संवाद के माध्यम से एक ऐसी सभ्यता और विकास के ऐसे प्रतीकों की तलाश करते हैं जिनसे आज की विकास की कल्पनाएं बेमानी साबित हो जाती है।

गांधी इस मामले में बहुत साफ थे कि सिर्फ अंग्रेजों के देश के चले जाने से भारत को सही स्वराज्य नहीं मिल सकता वे साफ कहते हैं कि हमें पश्चिमी सभ्यता के मोह से बचना होगा। पश्चिम के शिक्षण और

विज्ञान से गांधी अपनी संगति नही बिठा पाते। वे भारत की धर्मपरायण संस्कृति में भरोसा जताते हैं और भारतीय से आत्मशक्मि के उपयोग का आह्वाहन करते हैं। भारतीय परंपरा के प्रति गहरे अनुराग के चलते वे अंग्रेजी की रेल व्यवस्था चिकित्सा व्यवस्था न्याय व्यवस्था सब पर सवाल खड़े करते हैं। जो एक व्यापक बहस का विषय हो सकता है। हालांकि उनकी इस पुस्तक की तमाम क्रांतिकारी स्थापनाआं से देश और विदेश के तमाम विद्वान सहमत नहीं हो पाते। स्वयं श्री गोपाल कृष्ण गोखले जैसे महान नेता को भी इस किताब में कच्चापन नजर आया। गांधी जी के यंत्रवाद के विरोध को दुनिया के तमाम विचारक सही नहीं मानते। मिडलटन मरी कहते हैं– गांधी जी अपने विचारों के जोश में यह भूल जाते हैं कि जो चरखा उन्हें बहुत प्यारा है वह भी एक यंत्रा ही है और कुदरत ही नहीं इंसान की बनाई हुई चीज है। हालांकि जब दिल्ली की एक सभा में उनसे यह पूछा गया कि क्या आप तमाम यंत्रों के खिलाफ हैं तो महात्मा गांधी ने अपने इसी विचार को कुछ अलग तरह से व्यक्त किया है। महात्मा गांधी नेकहा कि वैसा मैं कैसे हो सकता हूँ जब मै यह जानता हूँ कि यह शरीर भी एक बहुत नाजुक यंत्र ही है। खुद चरखा भी एक यंत्र ही है छोटी सी दांत कुरेदनी भी यंत्र है। मेरा विरोध यंत्रों के लिए नहीं बल्कि यंत्रों के पीछे जो पागलपन चल रहा है उसके लिए है।

गांधी यह भी कहते हैं मेरा उद्देश्य तमाम यंत्रों का नाश करना नहीं बल्कि हद बांधने का है। अपनी बात को साफ करते हुए गांधी जी ने कहा कि ऐसे यंत्र नहीं होने चाहिए जो काम न रहने के कारण आदमी के अंगों को जड़ और बेकार बना दें। कुल मिलाकर गांधी मनुष्य को पराजित होते नहीं देखना चाहते हैं। वे मनुष्य की मुक्ति के पक्षधर हैं। उन्हें मनुष्य की शर्त पर न मशीनें चाहिए न कारखाने।

महात्मा गांधी की सबसे बड़ी देन यह है कि वे भारतीयता का साथ नहीं छोड़ते उनकी सोच धर्म पर आधारित समाज रचना को देखने की है। वे भारत की इस असली शक्ति को पहचानने वाले नेता हैं। वे साफ कहते हैं– मुझे धर्म प्यारा है इसलिए मुझे पहला दुख तो यह है कि हिन्दुस्तान धर्मभ्रष्ट होता जा रहा है। धर्म का अर्थ मैं हिंदू मुस्लिम या जरथोस्ती धर्म नहीं करता। लेकिन इन सब धर्मो के अंदर जो धर्म हैं वह हिन्दुस्तान से जा रहा हैं हम ईश्वर से विमुख होते जा रहे हैं।

वे धर्म के प्रतीकों और तीर्थ स्थलों को राष्ट्रीय एकता के एक बड़े कारक के रूप में देखते थे। वे कहते हैं जिन दूरदर्शी पुरूषों ने संतुबंध रामेश्वरम् जगन्नाथपुरी और हरिद्वार की यात्रा निश्चित की उनका आपकी राय में क्या ख्याल रहा होगा। वे मूर्ख नहीं थे। यह तो आप भी कबूल करेंगे। वे जानते थे कि ईश्वर भजन घर बैठे भी होता है।

गांधी राष्ट्र को एक पुरातन राष्ट्र मानते थे। ये उन लोगों को एक करारा जवाब भी है जो यह मानते हैं कि भारत तो कभी एक राष्ट्र था ही नहीं और अंग्रेजों ने उसे एकजुट किया। एक व्यवस्था दी। इतिहास को विकृत करने की इस कोशिश पर गांधी जी का गुस्सा साफ नजर आता है। वे हिंद स्वराज्य में लिखते हैं– आपको अंग्रेजों ने सिखाया कि आप एक राष्ट्र नहीं थे और एक राष्ट्र बनने में आपको सैंकड़ों बरस लगे। जब अंग्रेज हिन्दुस्तान में नही थे तब हम एक राष्ट्र थे हमारे विचार एक थे। हमारा रहन–सहन भी एक था। तभी तो अंग्रेजों ने यहां एक राज्य कायम किया। गांधी इस अंग्रेजों की इस कूटनीति पर नाराजगी जताते हुए कहते हैं– दो अंग्रेज जितने एक नहीं है उतने हम हिन्दुस्तानी एक थे और एक है। एक राष्ट्र एक जन की भावना को महात्मा गांधी बहुत गंभीरता से परिभाषित करते है। वे हिन्दुस्तान की आत्मा को समझकर उसे जगाने के पक्षधर थे। उनकी राय में हिन्दुस्तान का आम आदमी देश की सब समस्याओं का समाधान है।

सर्वधर्म का दर्शन का उदय

सर्वधर्म के दर्शन का उदय तत्कालीन राष्ट्रीय राजनैतिक परिस्थितियों एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य या जिसमें ईसाई साम्राज्यवाद विश्व पर छा रहा था उसके संदर्भ में ही गाँधीजी के सर्वधर्म समभाव के चिन्तन के व्यावहारिक प्रभावों एवं परिणामों को समझा जा सकता है। आज सर्वधर्म समभाव का यह दर्शन अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ में और भी अधिक प्रासंगिक एवं महत्त्वपूर्ण हो चुका है। आज सम्पूर्ण विश्व में विविध धर्मो के लोक प्रत्येक रास्तों पर साथ–साथ रह रहे हैं और उनके बीच शान्ति एवं सद्भाव से भरे हुए राष्ट्रीय सहजीवन की चुनौती ज्वलन्त रूप से खड़ी है। अपने–अपने धर्म की विश्वभर में सत्ता स्थापित करने की लालसा से भली भाँति के उग्रवादी एवं आतंकवादी संगठन विश्व में सक्रिय हैं और आतंकवाद आज के विश्व में एक विकराल समस्या बन चुकी है। आतंकवाद के मूल में अपने–अपने धर्म पंथों की एक मात्र श्रेष्ठता का अभिमान पूर्ण

दूराग्रह है। जिसके कारण अन्य धर्म वालों की सत्ता एवं शासन सहभागिता को सहन नहीं किया जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस्लामी आतंकवाद एक विकराल समस्या के रूप में सामने है। संयुक्त राष्ट्र के घोषणा पत्र में भी विविध धर्मो के बीच समानता का सिद्धांत माना है। अतः सर्वधर्म का दर्शन आज के समय की माँग है साथ शक्ति है। सर्वधर्म के इस दर्शन का सम्यक् बोध आवश्यक है। ''दुनिया ने ऐसे बहुत से महापुरूष देखें है जिन्होंने राष्ट्रों के विचारों को प्रभावित किया है कुछ लोग ऐसे भी हुए है जिन्होंने मानव ह्रदय की गहराईयों को आलोकित किया है, यद्यपि बुद्धि को कम आकर्षित कर पाए हैं। महापुरूषों की एक तीसरे कोटि उनलोगों की है। जिन्होंने बड़ी भाड़ी संख्या में मनुष्यों की वृत्तियों और कार्यो का संचालन किया है, किन्तु गाँधी एक ऐसे व्यक्ति के अद्वितीय उदाहरण है जिसने विशाल जन समुदाय के विचारों और कार्यो को एक साथ प्रभावित किया। वे सम्पूर्ण व्यक्तित्व को आकर्षित करते थे, ह्रदय मस्तिष्क को और उन समस्त प्रवृत्तियों को, जो मनुष्य को सम्पूर्ण आत्मदान के लिए प्रेरित करती है।'' इस प्रकार गाँधीजी की सर्वधर्म समभाव की नीति का आध्यात्मिक आधार है। भारत सहस्त्राब्दियों पुरानी आध्यात्मिक प्राणव्यता, स्वराष्ट्र की आध्यात्मिक चेतना को सकल अभिव्यक्ति का माध्यम करने की साधना ही गाँधीजी की आध्यात्मिक शक्ति का आधार है।

गाँधीजी के अनुसार धर्म

गाँधीजी के अनुसार धर्म सीधी लकीर नहीं है बल्कि विशाल वृक्ष है। उसमें करोड़ों पत्तों में से दो पत्ते भी एक से नहीं हैं। उसकी प्रत्येक टहनी दूसरे से जुटा है उसकी एक भी आकृति रेखागणित की आकृति की तरह नपी नपाई नहीं होती, इसके बावजूद भी उसके बीज, टहनियाँ या पत्ते एक ही है। रेखागणित की आकृति सी संगति उसमें नहीं है फिर भी वृक्ष की शोभा से रेखागणित की आकृति की कोई तुलना नहीं की जा सकती। धर्म तो सीधी लकीर से परे हैं, क्योंकि वह बुद्धि से परे है, अनुभव से जाना जाता है। ''इस विश्व में ऐसी एक शक्ति है जिसका निश्चित और स्पष्ट शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता और जो विश्व की हर वस्तु में व्याप्त है। मैं उसका अनुभव करता हूँ। यद्यपि वह मुझे दिखाई नहीं देती। यह वह अदृश्य शक्ति है जो अपना अनुभव कराती है और किसी भी सारे प्राणों से परे है। क्योंकि वह ऐसे समस्त पदार्थो से सर्वथा भिन्न है जिसे मैं अपनी इन्द्रियों द्वारा देखता और अनुभव करता हूँ। यह इन्द्रियातीत है। इन्द्रियों की पहुँच से बाहर है। परंतु एक सीमा तक ईश्वर के अस्तिव को तर्क द्वारा सिद्ध किया जा सकता है।''

गाँधीजी धर्म से सामाजिक न्याय के बारे में कहते हैं– 'यथापिण्ड तथा ब्रह्माण्डे' इस न्याय के अनुसार जो बात जो व्यक्ति के लिए ठीक है वही समाज के लिए भी ठीक है, वही राजा प्रजा सम्बन्धों के लिए भी ठीक है, जहाँ धर्म नहीं वहाँ क्षय है। जैसी प्रजा होगी वैसा ही राजा और जैसा व्यक्ति होगा वैसा ही समाज होगा। सब का मूल व्यक्ति है और व्यक्ति का अस्तित्त्व केवल धर्म पर निर्भर है। गाँधीजी जब धर्मो को सच्चा मानते थे, ऐसा एक भी धर्म नहीं है जो सम्पूर्णता का दावा कर सके। वे धर्मो की तुलना करना अनावश्यक समझते थे। उनका मानना था कि अधर्म तो मनुष्य को अपूर्ण सत्ता द्वारा मिलती है। अकेला ईश्वर ही सम्पूर्ण है इसलिए अपने धर्म को प्रौढ़ मानकर दूसरे धर्मो के समझने की कोशिश करनी चाहिए। हिन्दू होने के कारण अपने लिए हिन्दु धर्म को सर्वश्रेष्ठ मानते हुए भी यह नहीं कह सकते कि हिन्दु धर्म सर्वश्रेष्ठ है और सारी दुनिया हिन्दू धर्म को अपनाए, इसी तरह गाँधीजी ईसाईयों और मुसलमानों से यह अपेक्षा रखते हैं कि वे इस्लाम और ईसाई धर्म को समूचे विश्व का धर्म बनाने का सपना और उस दिशा में किए जा रहे अपने प्रयत्नों को छोड़कर स्वधर्म का पालन करते हुए अन्य धर्मावलम्बियों की मदद करनी चाहिए। ईसाइयों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा था– –''आपको भी यदि अपने गैर ईसाई भाईयों की सेवा करनी हो तो आप उनकी सेवा उन्हें ईसाई बनाकर नहीं बल्कि उनके धर्म की त्रुटियों को दूर करने में और उसे शुद्ध बनाने में उनकी सहायता करके भी कर सकते हैं''। गाँधीजी के अनुसार सर्वधर्म समभाव रूप से पूर्ण या अपूर्ण है, ईश्वर प्रदत्त है तब मनुष्य को अपने पूर्वजों द्वारा अपनाए गए धर्म में युक्ति का उपाय खोजना चाहिए'' सत्य की खोज करनेवाला इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि सब धर्म द्रवीभूत होकर ईश्वर में मिलकर एक हो जाते हैं, उस ईश्वर में जो एक है और जो अपने सब जीवधारियों के लिए समान है।'' गाँधीजी धर्मो की तुलना अनावश्यक मानते हैं। अपने ही धर्म को प्रौढ़ मानकर उसका अनुसरण करने की सलाह देते हैं। साधारणतः धर्मो की तुलना में इस धर्म को मापदण्ड माना जा सकता है। जिस धर्म में दया को ज्यादा स्थान दिया गया है वहाँ धर्म अधिक है।

निष्कर्ष

सर्वधर्म समभाव की दृष्टि हिन्दुत्त्व की ही दृष्टि है। साथ ही गाँधीजी का स्पष्ट सत्यबोध है कि संसार में अनेक धर्म सदा से रहे है और उन्हें रहना भी चाहिए। यह विचार गाँधीजी के ज्ञान मीमांसा में 'सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। नैतिक महत्ता या नैतिक विषय शायद उनके लिए दोनों सत्य थे। किसी के विवेक के अंदर प्रबुद्ध होकर उसे समझ पाना किसी के लिए सभी कठिनाई खासतौर से जब जब वह व्यक्ति भिन्न सभ्यता का हो, और वह गाँधी से विवेक की तरह इतना सूक्ष्म और गहरा हो तो उसे समझ पाना और भी कठिन है। इतिहास में उनके जैसा साधु और रहस्यवादी शायद अतुलनीय है जो दैवी संदेशों और दिव्य दृष्टियों पर विश्वास नहीं करते यह भी नहीं चाहते कि कोई दूसरा उन पर विश्वास करें। उनमें एक नितान्त निष्कलंक हार्दिकता है। उनके विचार शांत और स्पष्ट है, हृदय अहंकारहीन है और लोगों की तरह वे भी मनुष्य हैं वे साधु की सत्ता नहीं चाहते''।

क्राइस्ट में बड़ी भारी शक्ति थी पर पश्चिम से पहुँचकर ईसाई धर्म विकृत हो गया, और वह बादशाहों का धर्म बन गया। लुई फिशर को एकबार उनके आश्रम साबरमती में लगभग एक सप्ताह ठहरने का मौका मिला उन्होंने उनकी कुटिया की दीवार पर एक सजावट देखी सादी तस्वीर ईसा मसीह की देखी जिस पर लिखाया'' यह हमारी शांति है।'' फिशर ने गाँधी से इस बारे में पूछा तो उन्होंन उत्तर दिया ''ईसाई हूँ। ईसाई हिन्दू, मुसलमान और यहूदी''। गाँधी धर्म को व्यक्तिगत स्वतंत्रता मानते थे। व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बिना समाज का निर्माण करना सम्भव नहीं है। गाधी के व्यक्तिवाद का अर्थ बाह्य परिस्थितियों से अधिकाधिक स्वतंत्रता तथा आन्तरिक गुणों का विकास था।

संदर्भ सूची

1. सुमित सरकार– आधुनिक भारत, पृष्ठ–77, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली– 1998
2. विश्वनाथ नरवणे–आधुनिक भारतीय चिन्तन, पृष्ठ 192, राजकमल प्रकाशन, 1966
3. विश्वनाथ नरवणे–उपर्युक्त पृष्ठ 192
4. फ्राँसिस नेल्सन–द ट्रेजडी ऑफ यूरोप–पृष्ठ–193
5. मो० क० गाँधी मेरे सपनों का भारत पृष्ठ–115 राजपाल एण्ड सन्स 2008
6. महात्मा गाँधी कलेक्टेड वर्क्स–खण्ड–12 पृष्ठ 92,94, भारत सरकार का प्रकाशन, नई दिल्ली।
7. रामेश्वर मिश्र पंकज–गाँधीजी की विश्वदृष्टि– पृष्ठ 74
8. विश्वनाथ नरवणे– उपर्युक्त– पृष्ठ–197
9. यंग इण्डिया–11.10.1928 (मोहनमाला से उद्धत)
10. सम्पूर्ण गाँधी वाङ्मय–41, पृष्ठ–63 प्रकाशन विभाग, भारत सरकार